श्रीलंका दौरे में क्लीन स्वीप कर इतिहास दोहराना चाहेगी भारतीय क्रिकेट टीम

मुम्बई

शुभमन गिल की कप्तानी में भारतीय क्रिकेट टीम अगले माह 15 अगस्त से मेजबान श्रीलंकाई टीम के खिलाफ दो टेस्ट मैचों की सीरीज खेलने के लिए उतरेगी। भारतीय टीम का लक्ष्य दो मैचों की इस सीरीज को जीतकर इतिहास दोहराना रहेगा। श्रीलंका की धरती पर भारतीय क्रिकेट टीम का टेस्ट रिकार्ड काफी रोमांचक रहा है।

भारत ने अब तक वहां कुल आठ टेस्ट सीरीज खेली हैं, जिनमें से तीन बार सीरीज उसने जीती है जबकि तीन बार मेजबान श्रीलंका की टीम को जीत मिली है। वहीं, दो टेस्ट सीरीज ड्रा रही है। भारतीय टीम ने पिछले तीन श्रीलंकाई दौरों में से 2010 की सीरीज ड्रा रही थी, जबकि 2015 और 2017 में भारत ने मेजबानों को हराकर शानदार जीत दर्ज की थी। साल 2017 के दौरे पर भारतीय टीम ने श्रीलंका के सभी मैच हराये थे। अब ठीक नौ सालों के लंबे इंतजार के बाद भारतीय टीम के पास एक बार फिर क्लीन स्वीप कर इतिहास दोहराने का अवसर है।

इस सीरीज का पहला टेस्ट गाल में खेला जाएगा जबकि दूसरा और निर्णायक टेस्ट मैच 23 अगस्त 2024 से कोलंबो में खेला जाएगा। श्रीलंका की स्पिन को सहायता देने वाली पिच और कठिन हालातों को देखते हुए भारतीय टीम की राह आसन नहीं है। इसी कारण एक ऐसी टीम चयनित की गयी है। जिसमें अनुभवी और युवा खिलाड़ी दोनो ही शामिल रहें। टीम की बल्लेबाजी को मजबूत करने के लिए यशस्वी जायसवाल, साई सुदर्शन और देवदत्त पडिक्कल को शामिल किया गया है। वहीं विकेटकीपिंग की जिम्मेदारी आक्रामक बल्लेबाज ऋषभ पंत और युवा ध्रुव जुरेल को मिली है। श्रीलंकाई पिचों पर स्पिनरों की भूमिका हमेशा बेहद महत्वपूर्ण रही है, जिसे देखते हुए चयनकर्ताओं ने रवींद्र जडेजा और कुलदीप यादव के अनुभवी हाथों के साथ-साथ मानव सुथार और सारांश जैन जैसे प्रतिभाशाली स्पिनरों को टीम में अवसर दिया है। वहीं, तेज गेंदबाजी की कमान जसप्रीत बुमराह और मोहम्मद सिराज संभालेंगे।

यह दो मैचों की सीरीज केवल एक सामान्य द्विपक्षीय मुकाबला नहीं है, बल्कि विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) अंकतालिका में टेबल में अपनी स्थिति मजबूत करने का एक महत्वपूर्ण अवसर भी है। अभी भारतीय टीम डब्ल्यूटीसी चक्र में पांचवें स्थान पर है, उसने नौ टेस्ट मैचों में चार जीत, चार हार और एक ड्रा के साथ 48.15 अंक प्रतिशत हासिल किए हैं। दूसरी ओर, श्रीलंका की स्थिति भी बहुत अलग नहीं है; श्रीलंकाई टीम तालिका में छठे स्थान पर है, जिसके पास चार मैचों में एक जीत, एक हार और दो ड्रा के साथ 41.67 अंक प्रतिशत हैं। ऐसे में दोनों ही टीमों के लिए यह सीरीज पाइंट्स टेबल में ऊपर चढ़ने और फाइनल की दौड़ में खुद को बनाए रखने के लिए बेहद महत्वपूर्ण है।

न्यूज ब्रीफ

रियल मैड्रिड ने युवा स्ट्राइकर कार्लोस को अपने साथ जोड़ा

मैड्रिड। स्पेन के शीर्ष फुटबाल क्लब रियल मैड्रिड ने लेवांते के युवा स्ट्राइकर कार्लोस एस्पी को अपने साथ जोड़ा है। रियल मैड्रिड ने एस्पी को करीब 25 मिलियन यूरो की मोटी रकम देकर खरीदा है। ऐसे में अब अगल सत्र से कार्लोस रियल की ओर से खेलते हुए दिखेंगे। रियल ने कहा कि कि कार्लोस अगले पांच साल तक उसके पास ही रहेंगे। इसके तहत ये फुटबालर जून, 2031 तक रियल की ओर से खेलेगा। गौरतलब है कि रियल मैड्रिड में आने से पहले कार्लोस ने लेवांते की ओर से तीन सत्र खेले हैं। इस दौरान उन्होंने कुल 66 मैचों में 20 गोल दागे हैं। उनका पिछला सीजन विशेष रूप से अच्छा रहा। इस दौरान उन्होंने 27 मैचों में 13 गोल किये। उन्हें पिछले सीजन में लीग का सर्वश्रेष्ठ अंडर-23 खिलाड़ी भी चुना गया था। कार्लोस के इन गोलों के कारण ही लेवांते को निचली लीग में जाने से बचा था। सत्र सीजन के आखिरी हफ्तों में उनके प्रदर्शन ने टीम को मजबूती मिली थी। इस स्ट्राइकर को अपनी टीम में शामिल करने के लिए स्पेनिश ला लीगा के क्लब विल्लारियल और इंग्लैंड की प्रीमियर लीग के साथ् ही कई बड़े क्लबों ने भी रुचि दिखायी थी। रियल मैड्रिड ने हालांकि इस दौड़ में बाजी मार ली। लेवांते ने संभावित चोट के खतरे को कम करने के लिए प्री-सत्र फ्रेंडली मैचों से बाहर रखा था, जो आमतौर पर बड़े ट्रांसफर से पहले किया जाता है। कार्लोस का रियल मैड्रिड में ऐसे समय में आये जब क्लब अपने स्ट्राइकर गोंजालो गार्सिया को इंग्लिश प्रीमियर लीग क्लब फुलहम को बेचने के करीब पहुंच गया है। गोंजालो की यह डील लगभग 40 मिलियन यूरो में फाइनल होने वाली है, जिससे मैड्रिड को काफी रकम मिलेगी। इससे टीम में नए स्ट्राइकर को भी जगह मिलेगी। हालांकि, अभी यह स्पष्ट नहीं है कि कार्लोस को अगले सत्र में सीधे मैड्रिड की फर्स्ट-टीम स्क्वाड में शामिल किया जाएगा या उन्हें शीर्ष स्तर का अनुभव हासिल करने के लिए किसी अन्य क्लब में लोन पर भेजा जाएगा। यह निर्णय शायद उनके प्री-सीजन प्रदर्शन और क्लब की रणनीतिक जरूरतों पर निर्भर करेगा ।

जर्सी विवाद; अब हाकी इंडिया अध्यक्ष बोले-बिना बताए कलर बदलाःदो दिन पहले कहा था- मैदान और जर्सी के नीले रंग से खिलाड़ियों को परेशानी

नई दिल्ली। भारतीय हाकी टीम की जर्सी का रंग नीला से नारंगी किए जाने पर विवाद गहरा गया है। अब हाकी इंडिया के अध्यक्ष दिलीप टिर्की ने जर्सी का रंग बदलने पर फेडरेशन के अधिकारियों से लिखित जवाब मांगा है। टिर्की का आरोप है कि यह फैसला उन्हें और एग्जीक्यूटिव बोर्ड की बिना मंजूरी के बिना लिया गया। ओडिशा सरकार ने भी टिर्की से इस मामले में स्पष्टीकरण मांगा है। हाल ही में हाकी इंडिया ने अगले महीने होने वाले हाकी वर्ल्ड कप के लिए भारतीय टीम की नई जर्सी लान्च की। इसके बाद कई पूर्व खिलाड़ियों और हाकी से जुड़े लोगों ने इस बदलाव पर सवाल उठाए। हाकी इंडिया ने कहा था- जर्सी के नए रंग के लिए अफसरों से सलाह ली हाकी इंडिया ने 27 जुलाई को भारतीय टीम की नारंगी रंग की नई जर्सी लान्च की। जर्सी का नीला रंग बदले जाने के बाद कई पूर्व खिलाड़ियों और हाकी से जुड़े लोगों ने इसका विरोध किया था। इस पर हाकी इंडिया ने गुरुवार को कहा कि इस पर खिलाड़ियों और फेडरेशन के कुछ वरिष्ठ अधिकारियों से सलाह ली गई थी।

विश्वकप के मुनाफे के निजीकरण पर यू-टर्न, विरोध के बाद फीफा अध्यक्ष इनफैनटिनो ने वापस लिया प्रस्ताव

न्यूयार्क । विश्व फुटबाल की सर्वोच्च संस्था फीफा के अध्यक्ष जियानी इनफैनटिनो ने विश्व कप के मुनाफे को निजी इक्विटी कंपनियों के साथ साझा करने की अपनी विवादास्पद योजना वापस ले ली है। दुनिया भर की प्रमुख फुटबाल संस्थाओं के तीखे विरोध के बाद इनफैनटिनो को अपने फैसले पर यू-टर्न लेना पड़ा। इनफैनटिनो ने शुक्रवार को जारी बयान में कहा कि विभिन्न पक्षों से बातचीत के बाद यह साफ हो गया कि यह प्रस्ताव फुटबाल जगत में मतभेद बढ़ा रहा है। ऐसे में इसे आगे बढ़ाना उचित नहीं होगा। क्या था पूरा प्रस्ताव फीफा अध्यक्ष ने विश्व कप के संचालन और उससे होने वाले राजस्व के लिए करीब 20 अरब डालर मूल्य की एक नई कंपनी बनाने का प्रस्ताव रखा था। इस योजना के तहत निजी निवेशकों को भी इसमें हिस्सेदारी देने की बात कही गई थी। हालांकि प्रस्ताव सामने आते ही दुनिया की कई फुटबाल संस्थाओं ने इसे विश्व फुटबाल के व्यावसायीकरण की दिशा में बड़ा कदम बताते हुए विरोध शुरू कर दिया। यूईएफए से लेकर एशिया तक हुआ विरोध सबसे पहले यूरोपीय फुटबाल की सर्वोच्च संस्था यूईएफए ने इस योजना का विरोध किया। यूईएफए के 55 सदस्य देशों ने फीफा के प्रस्ताव के खिलाफ विश्व कप और फीफा की अन्य प्रतियोगिताओं के बहिष्कार तक की चेतावनी दी।

राष्ट्रमंडल खेल 2026 : नौवें दिन छह पदकों के साथ भारत पदक तालिका में 10वें स्थान पर

भारत ने पांच स्वर्ण पदक के साथ अब तक जीते कुल 23 पदक

नई दिल्ली

राष्ट्रमंडल खेल 2026 के नौवें दिन शुक्रवार को भारत ने शानदार प्रदर्शन करते हुए दो स्वर्ण, दो रजत और दो कांस्य सहित कुल छह पदक अपने नाम किए। इसके साथ ही भारत के कुल पदकों की संख्या 23 हो गई और वह पदक तालिका में 10वें स्थान पर पहुंच गया। दिन की शुरुआत जूडो से हुई, जहां अस्मिता डे ने महिलाओं के 48 किलोग्राम वर्ग में स्वर्ण जीतकर राष्ट्रमंडल खेलों के इतिहास में जूडो में भारत का पहला स्वर्ण पदक दिलाया।

इसके कुछ ही देर बाद हर्ष सिंह ने पुरुषों के 60 किलोग्राम वर्ग में स्वर्ण जीतकर जूडो में भारत की ऐतिहासिक सफलता को आगे बढ़ाया। वहीं यामिनी ने अपने फाइनल मुकाबले में रजत पदक हासिल कर भारत के खाते में एक और पदक जोड़ा।

एथलेटिक्स में तेजस्विन शंकर ने पुरुषों की डेकाथलान स्पर्धा में कांस्य पदक जीतकर इतिहास रच दिया। वह इस स्पर्धा में राष्ट्रमंडल खेलों का पदक जीतने वाले पहले भारतीय बने। इसके बाद पुरुषों की भाला फेंक स्पर्धा में भारत ने शानदार डबल पोडियम हासिल किया। नीरज चोपड़ा ने रजत पदक जीता, जबकि यशवीर सिंह ने व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के साथ कांस्य पदक अपने नाम किया।

नौवें दिन के खेलों के बाद आस्ट्रेलिया 55 स्वर्ण, 30 रजत और 43 कांस्य सहित 128 पदकों के साथ शीर्ष पर बना हुआ है। इंग्लैंड 17 स्वर्ण, 34 रजत और 29 कांस्य के साथ दूसरे तथा कनाडा 17 स्वर्ण, 15 रजत और 21 कांस्य सहित कुल 53 पदकों के साथ तीसरे स्थान पर है।

वहीं भारत के खाते में अब 5 स्वर्ण, 12 रजत और 6 कांस्य सहित कुल 23 पदक हैं और वह पदक तालिका में 10वें स्थान पर है।

लवप्रीत की सफलता के पीछे छिपा है परिवार का त्याग

चंडीगढ़ । पंजाब के अमृतसर जिले के एक छोटे से गांव से आने वाले वेटलिफ्टर लवप्रीत सिंह ने राष्ट्रमण्डल खेलों में रजत पदक जीतकर अपनी पहचान बनायी है। लवप्रीत का यहां तक का सफर बेहद कठिन रहा है। आर्थिक तंगी और संघर्ष से निकलकर ही वह यहां तक पहुंचे हैं। लवप्रीत एक आर्थिक रुप से कमजोर परिवार से आते हैं। उनके पिता पेशे से एक दर्जी हैं, शुरुआत से ही परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं रही। इतने कठिन हालातों और अभाव के बावजूद, लवप्रीत के माता-पिता ने कभी भी उन्हें खेलने से नहीं रोका। उन्होंने उसके पदक जीतने का सपन पूरा करने कोई कसर नहीं रखी। पिता ने कभी भी लवप्रीत की ट्रेनिंग पर इसका असर नहीं पड़ने दिया। उन्होंने अपने बेटे के सपनों को पूरा करने के लिए हर संभव प्रयास किया, भले ही इसके लिए उन्हें खुद को और भी अधिक कठिनाइयों में डालना पड़ा हो। उनकी यह दृढ़ता और बलिदान ही लवप्रीत के सफल सफर की पहली सीढ़ी बनी। परिवार के किये त्याग की भी इसमें अहम भूमिका रही। वेटलिफ्टिंग जैसे खेल में शीर्ष पर पहुंचना केवल शारीरिक शक्ति का खेल नहीं होता, बल्कि यह मानसिक दृढ़ता और अथक परिश्रम की भी मांग करता है। लवप्रीत के लिए यह रास्ता आसान नहीं था। उन्हें अपनी डाइट, ट्रेनिंग और आवश्यक उपकरणों के लिए अक्सर संघर्ष करना पड़ा। कई बार परिवार को कर्ज का सहारा भी लेना पड़ा होगा ताकि उनके बेटे का प्रशिक्षण बाधित न हो। लवप्रीत ने हर बाधा को अपनी संकल्प शक्ति से पार किया। घंटों जिम में पसीना बहाना, सख्त अनुशासन का पालन करना और हर रोज खुद को बेहतर बनाने की ललक ने उन्हें धीरे-धीरे राष्ट्रीय स्तर के मंच तक पहुंचाया। हर चुनौती को उन्होंने अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने का एक और कदम माना। कामनवेल्थ गेम्स के मंच पर, लवप्रीत का प्रदर्शन उनकी सालों की तपस्या का फल था। 176 किलोग्राम के रिकार्ड स्नैच और फिर क्लीन एंड जर्क में शानदार लिफ्टिंग के साथ, उन्होंने कुल 388 किलोग्राम भार उठाकर दिखा दिया कि वे किसी से कम नहीं। लवप्रीत की यह कहानी सिर्फ वेटलिफ्टिंग में एक जीत भर नहीं है, बल्कि यह उन लाखों युवाओं के लिए एक मशाल है जो आर्थिक और सामाजिक बाधाओं के कारण अपने सपनों को पूरा करने से हिचकते हैं।

वैभव को कम उम्र में उपकप्तानी दिये से एक नई बहस शुरु हुई

दिग्गज खिलाड़ियों ने जतायी चिंता , चयनकर्ता ने किया बचाव

मुम्बई

15 साल के उभरते हुए क्रिकेटर वैभव सूर्यवंशी को अगले माह होने वाले दलीप ट्राफी 2026 के लिए ईस्ट जोन का उपकप्तान बनाये जाने के बाद से ही एक नई बहस शुरु हो गयी है। कई दिग्गजों का कहना है कि इतनी कम उम्र में अपकप्तानी के बोझ से वैभव का खेल प्रभावित होगा। वहीं चयनकर्ताओं ने अपने कदम को सही करार देते हुए वैभव को भविष्य का कप्तान करार दिया।

खेल विशेषज्ञों और पूर्व खिलाड़ियों के एक वर्ग ने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि वैभव पर उप-कप्तानी का अतिरिक्त दबाव डालने की जगह उन्हें अपनी बल्लेबाजी और खेल पर ध्यान केंद्रित करने की पूरी आजादी मिलनी चाहिए थी। विशेषज्ञों का मानना है कि एक उभरते हुए सितारे पर इतनी जल्दी नेतृत्व की भूमिका थोपना उसकी प्राकृतिक प्रगति में बाधा डाल सकता है।

हालांकि, आलोचनाओं के इस माहौल के बीच ईस्ट जोन के चयनकर्ताओं में से एक और पूर्व रणजी खिलाड़ी प्रबंजन मलिक ने इस फैसले का बचाव किया। मलिक ने चयन समिति के इस महत्वपूर्ण निर्णय के पीछे की सोच को स्पष्ट किया। मलिक ने उठ रहे सवालों का जवाब देते हुए जोर देकर कहा कि वैभव को कप्तान नहीं, बल्कि उप-कप्तान बनाया गया है, कप्तानी की जिम्मेदारी अनुभवी ईशान किशन निभाएंगे।

मलिक ने समझाया, ईशान एक विकेटकीपर हैं जो मैदान पर पूरे दिन सक्रिय रहते हैं और खेल की रणनीतियों में शामिल होते हैं।

मलिक ने आगे कहा कि जैसे-जैसे वैभव परिपक्व हो रहे हैं, उन्हें अधिक जिम्मेदारी देने से वह एक खिलाड़ी और नेतृत्वकर्ता के रूप में और बेहतर बनकर उभरेंगे। चयनकर्ताओं का मानना है कि वैभव के लिए नेतृत्व की यह भूमिका नई नहीं है। मलिक ने याद दिलाया कि वह अपनी घरेलू टीम बिहार के लिए प्रथम श्रेणी क्रिकेट में भी उप-कप्तान की जिम्मेदारी संभाल चुके हैं। इसके अतिरिक्त, 2026 के अंडर-19 विश्व कप में भी वह भारतीय टीम में आयुष म्हात्रे के डिप्टी (उप-कप्तान) रह चुके हैं। वैभव के हालिया प्रदर्शन की तारीफ करते हुए मलिक ने कहा, वह देश के लिए बहुत शानदार प्रदर्शन कर रहे हैं, और राजस्थान रायल्स के लिए उनका हालिया आईपीएल सीजन भी बेहद शानदार रहा है। दलीप ट्राफी जैसे बड़े मंच पर यह जिम्मेदारी उनके लिए एक बेहतरीन अवसर है। वह देश के लिए कुछ बड़ा करना चाहते हैं और चयनकर्ताओं के रूप में हमारा मानना है कि युवा खिलाड़ियों को जिम्मेदारी देना बहुत जरूरी है। मलिक ने यह भी संकेत दिया कि चयनकर्ता वैभव में भविष्य के भारतीय कप्तान की झलक देखते हैं। उन्होंने कहा, कौन जानता है हम उम्मीद कर रहे हैं कि एक दिन वह भारतीय नेशनल टीम के कप्तान भी बन सकते हैं। वैभव को उप-कप्तान बनाने के पीछे हमारी यही सोच काम कर रही थी।

इंग्लैंड में छाए हुए हैं भारतीय आलराउंडर आशुतोष

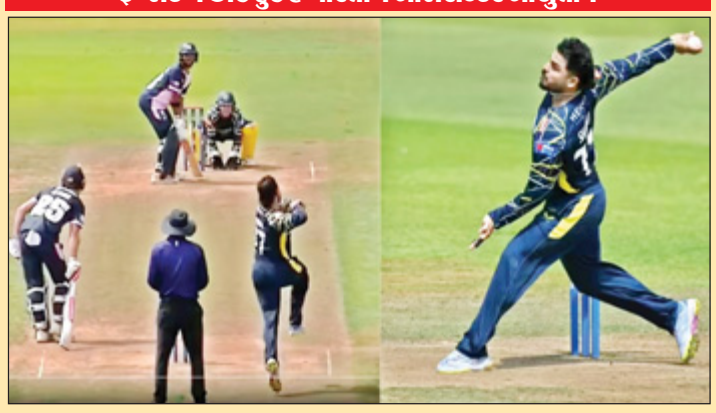

लंदन। भारतीय तेज गेंदबाज आशुतोष शर्मा आजकल इंग्लैंड में अपने शानदार प्रदर्शन से छाये हैं। आशुतोष ने मेट्रो एकदिवसीय कप में हैम्पशायर की ओर से खेलते हुए केवल चार मैचों में ही 13 विकेट लेकर सभी को हैरान कर दिया है। उन्होंने सेसेक्स के खिलाफ मुकाबले में पांच विकेट लिए। ससेक्स के खिलाफ मुकाबले में आशुतोष ने तीन विकेट लेकर हैम्पशायर को जीत दिलायी। उन्होंने अपने 10 ओवर में केवल 51 रन देकर पांच विकेट लिए। उनकी सटीक लाइन और लेंथ के सामने विरोधी बल्लेबाज टिक नहीं पाये। एकदिवसीय कप में आशुतोष ने 21 जुलाई को यार्कशायर के खिलाफ अपने डेब्यू मैच में ही तीन विकेट लेकर अपने को साबित किया था। इसके बाद मिडिलसेक्स के खिलाफ उन्होंने चार विकेट जबकि वार्सेस्टरशायर के खिलाफ एक विकेट लिया। वहीं ससेक्स के खिलाफ पांच विकेट लेकर उन्होंने जबरदस्त जोरदार वापसी की। आशुतोष के इस शानदार प्रदर्शन से उनकी आईपीएल फ्रेंचाइजी दिल्ली कैपिटल्स भी उत्साहित है। दिल्ली कैपिटल्स ने सोशल मीडिया में आशुतोष की सराहना करते हुए उनके लिए एक पोस्ट भी साझा की है। इससे पहले आईपीएल में दिल्ली के लिए आशुतोष ने पिछले दो आईपीएल सीजन में एक फिनिशर की भूमिका बखूबी निभाई थी। उन्होंने 21 मैचों में 375 रन बनाए हैं, जिसमें उन्होंने कई बार कठिन हालातों में टीम को संभाला है। उनका यह आलराउंड प्रदर्शन उन्हें और भी मूल्यवान बनाता है।

डीपीएल 2026 : अनुज रावत का शतक बेकार, सेंट्रल दिल्ली किंग्स ने चार विकेट से जीता पहला मुकाबला

नई दिल्ली

दिल्ली प्रीमियर लीग (डीपीएल) 2026 का आगाज अरुण जेटली स्टेडियम में शुक्रवार रात रोमांचक मुकाबले के साथ हुआ, जहां सेंट्रल दिल्ली किंग्स ने अनुज रावत के शानदार शतक पर पानी फेरते हुए पुरानी दिल्ली 6 को चार विकेट से हरा दिया।

मुकाबले से पहले मशहूर गायक सुखबीर सिंह और सुनंदा शर्मा के रंगारंग कार्यक्रम ने दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया।

पहले बल्लेबाजी करते हुए पुरानी दिल्ली 6 की शुरुआत बेहद खराब रही और टीम पांच ओवर के भीतर 30 रन पर तीन विकेट गंवा बैठी। इसके बाद कप्तान अनुज रावत और देव लाकड़ा ने चौथे विकेट के लिए 132 रन की शानदार साझेदारी कर टीम को संकट से उबारा।

देव लाकड़ा ने 37 गेंदों में 53 रन की संयमित पारी खेली, जबकि अनुज रावत ने कप्तानी पारी खेलते हुए 59 गेंदों में नाबाद 105 रन बनाए। उन्होंने अपनी पारी में 11 चौके और पांच छक्के लगाए। 99 रन पर जीवनदान मिलने के बाद अगली ही गेंद पर उन्होंने इस सत्र का पहला शतक पूरा किया। उनकी बदौलत पुरानी दिल्ली 6 ने 20 ओवर में चार विकेट पर 202 रन का मजबूत स्कोर खड़ा किया।

203 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी सेंट्रल दिल्ली किंग्स ने आक्रामक शुरुआत की। कप्तान यश धुल और सिद्धार्थ जून ने पहले विकेट के लिए केवल 4.5 ओवर में 65 रन जोड़ दिए। जून 14 गेंदों में 23 रन बनाकर आउट हुए, जबकि युगल सैनी ने 16 गेंदों में 22 रन का योगदान दिया। यश धुल ने शानदार बल्लेबाजी जारी रखते हुए 45 गेंदों में 72 रन की कप्तानी पारी खेली। उनके आउट होने के बाद वंश बेदी ने 13 गेंदों में 28 रन बनाकर टीम को लक्ष्य के करीब पहुंचाया।

अंतिम ओवरों में मुकाबला बेहद रोमांचक हो गया। केशव दाबस ने दबाव में शानदार बल्लेबाजी करते हुए पेनल्टिमेट ओवर की आखिरी दो गेंदों पर लगातार दो चौके जड़कर समीकरण अंतिम ओवर में तीन रन का कर दिया। इसके बाद जसवीर सहरावत ने विजयी रन बनाकर सेंट्रल दिल्ली किंग्स को चार विकेट से शानदार जीत दिला दी और टीम ने डीपीएल 2026 में विजयी शुरुआत की।

बरसों का सपना साकार, अब देश के लिए खेलने का जुनून

इंदौर के सारांश जैन की टीम इंडिया तक पहुंचने की भावुक कहानी; पिता की प्रेरणा, गुरुओं की सीख और संघर्ष बना सफलता का आधार

इंदौर

वर्षों की मेहनत, संघर्ष और सपनों के लंबे इंतजार के बाद इंदौर के आलराउंडर सारांश जैन ने भारतीय क्रिकेट टीम तक पहुंचने का मुकाम हासिल कर लिया है। श्रीलंका दौरे के लिए भारतीय टेस्ट टीम में चयन के बाद उनके चेहरे पर खुशी के साथ जिम्मेदारी का भाव भी साफ दिखाई दिया। सारांश ने कहा कि भारतीय जर्सी पहनना उनके जीवन का सबसे बड़ा सपना था और अब लक्ष्य है कि देश के लिए मैदान पर अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करूं।

स्टेट प्रेस क्लब, म.प्र. के रूबरू कार्यक्रम में

मीडिया से चर्चा करते हुए सारांश ने कहा कि उन्हें उम्मीद है कि श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट सीरीज में अंतिम एकादश में खेलने का अवसर मिलेगा। उन्होंने कहा कि मौका मिला तो वह अपने प्रदर्शन से टीम के भरोसे पर खरा उतरने का पूरा प्रयास करेंगे।

पिता की बीमारी के बीच मिला था हौसले का संदेश – सारांश ने अपनी सफलता का सबसे बड़ा श्रेय अपने पिता सुबोध कुमार जैन को दिया। उन्होंने भावुक होकर बताया कि जब उनके पिता मुंह के कैंसर से जूझ रहे थे, तब वह एमपीसीए के दौरे पर आस्ट्रेलिया में क्रिकेट खेल रहे थे। परिवार ने उस समय उनसे पिता की बीमारी की बात छिपाकर रखी थी। इंदौर लौटने के बाद जब सारांश को इस बारे में जानकारी मिली तो वह बेहद दुखी हुए। लेकिन पिता ने बीमारी के बीच भी बेटे का हौसला टूटने नहीं दिया। उन्होंने कागज पर लिखकर संदेश दिया- तुम जितना अच्छा क्रिकेट खेलोगे, मैं उतनी जल्दी ठीक हो जाऊंगा। पिता के इस विश्वास ने सारांश को नई ऊर्जा दी और उन्होंने मैदान पर अपनी मेहनत और जुनून को कई गुना बढ़ा दिया।

हिरवानी, खुरासिया और पंडित ने तराशा हुनर – आफ स्पिनर सारांश ने अपने क्रिकेट सफर में मिले मार्गदर्शन को याद करते हुए कहा कि वरिष्ठ क्रिकेटरों का योगदान उनकी सफलता में बेहद अहम रहा है। पूर्व भारतीय क्रिकेटर नरेंद्र हिरवानी और अमय खुरासिया ने उन्हें क्रिकेट की बारीकियां सिखाईं। वहीं मध्यप्रदेश टीम के कोच चंद्रकांत पंडित का मार्गदर्शन उनके लिए बेहद महत्वपूर्ण रहा। सारांश ने रविचंद्रन अश्विन और हरभजन सिंह को अपना आदर्श खिलाड़ी बताया। उन्होंने कहा कि हाल ही में हरभजन सिंह से मिली सीख ने उन्हें काफी प्रेरित किया। सफलता के लिए लगातार मेहनत और समर्पण जरूरी है, इसी सोच को उन्होंने अपने जीवन का हिस्सा बनाया।

संघर्ष के दौर में कई बार टूटा हौसला – सारांश ने अपने संघर्ष के दिनों को याद करते हुए कहा कि टीम इंडिया तक पहुंचने का सफर आसान नहीं था। कई बार परिस्थितियां ऐसी बनीं कि क्रिकेट छोड़ने का विचार आया, लेकिन परिवार ने हर कदम पर उनका हौसला बढ़ाया। रणजी क्रिकेटर रहे उनके पिता का सपना था कि उनका बेटा एक दिन भारत का प्रतिनिधित्व करे। चयन के बाद पिता का भावुक संदेश उनके लिए सबसे बड़ा पुरस्कार बना। सारांश ने अपने बड़े भाई, परिवार और मध्यप्रदेश टीम के साथियों का आभार जताते हुए कहा कि अब उनकी पूरी तैयारी भारतीय टीम के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ देने की है।

मंदिर दर्शन के बाद मिली जिंदगी बदलने वाली खबर – सारांश ने बताया कि टीम चयन वाले दिन वह इंदौर के गुमास्ता नगर नाकोड़ा जैन मंदिर और रणजीत हनुमान मंदिर में दर्शन करने गए थे। मंदिर से लौटने के बाद जैसे ही वह गाड़ी में बैठे, सोशल मीडिया पर भारतीय टीम में चयन की खबर दिखाई दी। शुरुआत में उन्हें विश्वास नहीं हुआ, लेकिन लगातार आने वाले फोन काल और बधाई संदेशों ने इस ऐतिहासिक पल को सच साबित कर दिया। सारांश ने कहा कि यह क्षण उनके और पूरे परिवार के लिए बेहद भावुक था।